# 07

# जन आंदोलन का उदय

## परिचय

- 1973 में उत्तराखंड के एक गांव में असाधारण घटना घटी जिस गांव के स्त्री-पुरुष एकजुट हुए और जंगलों की व्यवसायिक कटाई का विरोध किया।
- सरकार ने जंगलों की कटाई के लिए अनुमति दी थी। यह एक नया तरीका था। इन लोगों ने पेड़ों को बांहों से घेर लिया।
- बाद में यह भारत के पर्यावरण आंदोलन के रूप में परिणत हुआ और चिपको आंदोलन के नाम से विश्व प्रसिद्ध हुआ।

## चिपको आंदोलन

- इसकी शुरुआत उत्तराखंड के दो-तीन गांव से हुई थी गांव वालों ने विभाग से कहा था कि खेती-बाड़ी के औजार बनाने के लिए हमें अंगू के पेड़ काटने की अनुमति दी जाए,वन विभाग ने अनुमति देने से इनकार कर दिया।
- विभाग ने खेल सामग्री बनाने वाला विनिर्माता को जमीन का यही टुकड़ा व्यवसायिक इस्तेमाल के लिए आवंटित कर दिया यह विरोध बड़ी जल्दी उत्तराखंड के अन्य इलाकों में फैल गया और आर्थिक शोषण से जुड़ गया।
- चिपको आंदोलन में महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी की।यह एकदम नया था इलाके में सक्रिय जंगल कटाई के ठेकेदार यहां के पुरुषों को शराब की आपूर्ति का भी व्यवस्था करते थे।
- सरकार ने 15 सालों के लिए हिमालय क्षेत्र के पेड़ों की कटाई पर रोक लगा दी ।
- यह आंदोलन देश के विभिन्न भागों में उठ रहे जन आंदोलनों का प्रतीक बन गया।

## दल आधारित आंदोलन

- जन आंदोलन कभी सामाजिक तो कभी राजनीतिक आंदोलन का रूप भी ले सकते हैं और अक्सर आंदोलन दोनों ही रूपों के मेल से बने नजर आते हैं।
- ऐसे कुछ आंदोलन आजादी के बाद के दौर में भी चलते रहे।मुंबई,कोलकाता और कानपुर जैसे बड़ें शहरों के औद्योगिक मजदूरों के बीच मजदूर संगठनों का बड़ा जोर था।
- सभी बड़ी पार्टियां मजदूरों को लामबंद करने के लिए अपने-अपने मजदूर संगठन बनाए ।
- आंध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र के किसान कम्युनिस्ट पार्टियों के नेतृत्व में लामबंद

© NCERT not to be republished

हुए, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और बिहार के कुछ भागों में किसान तथा खेतिहर मजदूरों ने मार्क्सवादी लेनिनवादी कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं के नेतृत्व में अपना विरोध जारी रखा।

- किसान और मजदूरों के आंदोलन का मुख्य जोर आर्थिक अन्याय तथा और असमानता के मसले पर रहा।

## राजनीतिक दलों से स्वतंत्र आंदोलन

- राजनीतिक दलों से स्वतंत्र आंदोलन
- 70 और 80 के दशक में जनता पार्टी के रूप में गैर कांग्रेसवाद का प्रयोग कुछ खास नहीं चल पाया। इसकी असफलता से राजनीतिक अस्थिरता का माहौल कायम हुआ।
- नियोजित विकास का मॉडल अपनाया गया लेकिन इसके बावजूद गरीबी और असमानता बड़े पैमाने पर बरकरार रही ।
- कई समूहों का विश्वास लोकतांत्रिक संस्थाओं और चुनावी राजनीति से उठ गया। यह समूह दलगत राजनीति से अलग हुए और आवाम को लामबंद करना शुरू किया। आदिवासी जैसी हाशिए पर धकेल दिए गए समूहों को लामबंद करना शुरू किया।
- स्वयंसेवी संगठनों ने अपने को दलगत राजनीति से दूर रखा।स्थानीय अथवा क्षेत्रीय स्तर पर यह संगठन न तो चुनाव लड़े और न ही इन्होंने किसी एक राजनीतिक दल को समर्थन दिया।

## दलित पैंथर्स

- आजादी के 20 साल बाद भी दलित समुदाय को पीड़ा के अनुभवों से गुजरना पड़ रहा था।दलित समुदाय अपने लिए एक सुंदर भविष्य की आशा से भरा हुआ था। एक ऐसा भविष्य जिसे दलित समुदाय स्वयं अपने हाथों से गढे।
- दलित मुक्ति से प्रेरित अधिकांश रचनाओं में डॉक्टर अंबेडकर का वर्णन एक प्रेरणा पुरूष के रूप में मिलता हैं।
- सातवें दशक के शुरुआती सालों में शिक्षित दलितों की पीढ़ी ने अनेक मंचों से अपनी आवाज उठाई। इसी क्रम में महाराष्ट्र में 1972 में दलित युवाओं का एक संगठन 'दलित पैंथर्स' बना।
- मुख्यतः जाति आधारित और असमानता और भौतिक साधनों के मामले में अपने साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ लड़ रहे थे ।
- दलित जिन राजनीतिक दलों का समर्थन कर रहे थे जैस-रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया वे राजनीति में सफल नहीं हो पा रही थी।
- इन्हीं वजह से दलित पैंथर्स ने दलित अधिकारों की दावेदारी करते हुए जन कार्रवाई का रास्ता अपनाया।
- सरकार ने 1889 में एक कानून बनाया इस कानून के अंतर्गत दलित पर अत्याचार करने वाले के लिए कठोर दंड का प्रावधान किया गया।
- बैकवर्ड एंड माइनॉरिटी इंप्लाइज फेडरेशन (बामसेफ) ने दलित पैंथर्स की अवनति ने उत्पन्न एक रिक्त स्थान की पूर्ति की।

© JCERT not to be republished

## भारतीय किसान यूनियन

- पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा के किसानों का एक संगठन था सरकार ने हरित क्रांति की नीति अपनाई तो 1960 के दशक के अंतिम सालों में हरियाणा, पंजाब, और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को फायदा शुरू हुआ इन इलाकों में गन्ना, गेहूं मुख्य नकदी फसलें बने।
- भारतीय किसान यूनियन ने गन्ने और गेहूं के सरकारी मूल्य में बढ़ोतरी करने, अंतर्राज्यीय आवाजाही पर लगे पाबंदियाँ हटाने समुचित दर पर गारंटीशुदा बिजली आपूर्ति करने, किसानों के बकाया कर्ज माफ करने तथा किसानों के लिए पेंशन का प्रावधान करने की मांग की।
- सरकार पर अपनी मांगों को मानने के लिए दबाव डालने के क्रम में बीकेयू ने रैली, धरना प्रदर्शन और जेल भरो अभियान चलाया।
- इस लामबंदी का एक नया पक्ष यह था कि इसमें किसानों के जातिगत जुड़ाव का इस्तेमाल किया गया।
- 1990 के दशक के शुरुआती सालों तक बीकेयू ने अपने को सभी राजनीतिक दलों से दूर रखा तथा संख्या बल के दम पर राजनीति में एक दबाव समूह की तरफ सक्रिय था।

## नेशनल फिशवर्कर्स फोरम

- मछुआरों की संख्या के लिहाज से भारत का विश्व में दूसरा स्थान है ।
- अपने देश के पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों ही तटीय इलाकों में देशी मछुआरा समुदायों की हजारों-हजार परिवार मछली मारने के पेशे में संलग्न है।
- आर्थिक उदारीकरण की नीति की शुरुआत हुई तो बाध्य होकर मछुआरों के स्थानीय संगठनों ने अपना एक राष्ट्रीय मंच बनाया इसका नाम नेशनल फिसवर्कर्स फोरम (एनएफएफ) रखा ।

## ताड़ी विरोधी आंदोलन

- आंध्र प्रदेश के नेल्लोंर जिले के गांव दुबरगंटा में 1990 के शुरुआती दौर में महिलाओं के बीच प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम चलाया गया जिसमे महिलाओं ने बड़ी संख्या में पंजीकरण कराया कक्षाओं में महिलाएं घर के पुरुषों द्वारा देशी शराब ताड़ी आदि पीने की शिकायतें करती रही।
- नेल्लोर में महिलाएं ताड़ी की बिक्री के खिलाफ आगे आई। शराब की दुकानों को बंद कराने के लिए दबाव बनाना शुरू शुरू किया, तकरीबन 500 गांव की महिलाओं ने आंदोलन में भाग लिया।
- ताडी विरोधी आंदोलन महिला आंदोलन का एक हिस्सा बन गया इससे पहले घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, कार्यस्थल एवं सार्वजनिक स्थानों पर यौन उत्पीड़न के खिलाफ काम करने वाली महिला समूह आमतौर पर शहरी मध्यवर्गीय महिलाओं के बीच ही सक्रिय थे।
- संविधान के 73वें 74वें संशोधन के अंतर्गत महिलाओं को स्थानीय राजनीति निकायों में आरक्षण दिया गया। इस व्यवस्था को राज्यों की विधानसभाओं तथा संसद में भी लागू करने की मांग की जा रही है।

## नर्मदा बचाओ आंदोलन

- सरदार सरोवर परियोजना- भारत के मध्य भाग में स्थित नर्मदा घाटी ने विकास परियोजना के तहत मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र से गुजरने वाली नर्मदा और

© JCERT not to be republished

उसकी सहायक नदियों पर 30 बड़े 135 मझोलें तथा 300 छोटे बांध बनाने का प्रस्ताव रखा गया।

- गुजरात के सरदार सरोवर और मध्यप्रदेश की नर्मदा सागर बांध के रूप में दो सबसे बड़ीऔर बहुउद्देशीय परियोजनाओं का निर्धारण किया गया।
- बांध समर्थकों का कहना है कि इसके निर्माण से गुजरात के एक बहुत बड़े हिस्से सहित तीन पड़ोसी राज्यों मे पीने के पानी, सिंचाई और बिजली के उत्पादन की सुविधा मुहैया कराई जा सकेगीं। बाढ़ और सूखे की आपदाओं पर अंकुश लगाया जा सकेगा।
- बांध के निर्माण से संबंधित राज्य के 245 गांव डूब के क्षेत्र में आ रहे थे अतः प्रभावित गांवों के करीब ढाई लाख लोगों के पुनर्वास का मुद्दा सबसे पहले स्थानीय कार्यकर्ताओं ने उठाया।
- आंदोलन की शक्ल 1988-89 के दौरान मिली जब कई स्थानीय स्वयंसेवी संगठनों ने खुद को नर्मदा नर्मदा बचाओ आंदोलन के रूप में गठित किया।
- सरकार द्वारा 2003 में स्वीकृत राष्ट्रीय पुनर्वास नीति को नर्मदा बचाओ जैसे सामाजिक आंदोलन की उपलब्धि के रूप में देखा जा सकता है।
- सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को बांध का काम आगे बढ़ाने की हिदायत दी है लेकिन साथ ही साथ प्रभावित लोगों का पुनर्वास सही ढंग से किया जाए।
- नर्मदा बचाओ आंदोलन देश के विभिन्न हिस्सों में चल रहे समाजिक आंदोलनों के गठबंधन का अंग बन गया।

## जन आंदोलन के सबक

- जन आंदोलन का इतिहास हमें लोकतांत्रिक राजनीति को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है।
- इन आंदोलनों का उद्देश्य दलीय राजनीति की खामियों को दूर करना था।
- विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए आंदोलन अपनी बात रखने का बेहतर माध्यम बनकर उभरे।
- आलोचकों का मत है कि हड़ताल, धरना और रैली जैसी सामूहिक कार्रवाईयों से सरकार के कामकाज पर बुरा असर पड़ता है।

## सूचना के अधिकार का आंदोलन

- इस आंदोलन की शुरुआत 1990 के दशक में हुई और इसका नेतृत्व किया मजदूर किसान शक्ति संगठन (एमकेएसएस)।
- राजस्थान के इस संगठन ने सरकार के सामने मांग रखी कि अकाल राहत कार्य और मजदूर को दी जाने पगार के रिकार्ड का सार्वजनिक खुलासा किया जाए।
- इन लोगों को लग रहा था कि स्कूलों, डिस्पेंसरी, छोटे बांधों तथा सामुदायिक केंद्रों के निर्माण कार्य के दौरान उन्हें दी गई मजदूरी में भारी घपला हुआ है।
- आंदोलन के दबाव में आकर सरकार को राजस्थान पंचायती राज अधिनियम में संशोधन करना पड़ा।
- 1996 में एमकेएसएस ने दिल्ली में सूचना के अधिकार को लेकर राष्ट्रीय समिति का गठन किया, इस कार्रवाई का लक्ष्य सूचना के अधिकार को राष्ट्रीय अभियान का रुप देना था।

© JCERT not to be republished

- 2002 में सूचना की स्वतंत्रता नाम का एक विधेयक पारित हुआ था यह कमजोर अधिनियम था जिसे लागू नहीं किया गया।
- सन् 2004 में सूचना के अधिकार के विधेयक को सदन में रखा गया, जून 2005 में विधेयक को राष्ट्रपति की मंजूरी हासिल हुई।

## स्मरणीय तथ्य

- चिपको आंदोलन की शुरुआत 1973 में चमोली जिले उत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तराखंड) से हुई थी।
- 1972 में दलित युवाओं का एक संगठन महाराष्ट्र में दलित पैंथर्स बना।
- हरित क्रांति की शुरुआत 1966-67 में हुई थी।
- विश्व में हरित क्रांति का श्रेय ई० बोरलाग दिया जाता है।
- भारत में हरित क्रांति के जनक एम०के० स्वामीनाथन है।
- ताड़ी विरोधी आंदोलन आंध्र प्रदेश में महिलाओं का एक स्वत: स्फूर्त आंदोलन था।
- सरदार सरोवर बांध नर्मदा नदी पर स्थित है।
- नर्मदा घाटी परियोजना के तहत मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र में बांध बनाने का प्रस्ताव रखा गया है।
- 2004 में सूचना के अधिकार विधेयक को संसद के सदन में रखा गया।
- जून 2005 में विधेयक को राष्ट्रपति की मंजूरी हासिल हुई।

© JCERT not to be republished

## बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. किस राज्य में 1972 में दलित युवाओं का एक संगठन दलित पैंथस´ बना?

a. महाराष्ट्र b. झारखंड

c. मध्य प्रदे d. पश्चिम बंगाल

प्रश्न 2. मछुआरों की संख्या के लिहाज से भारत का विश्व में कौन सा स्थान प्राप्त है?

a. पहला b. दूसरा

c. तीसरा d. चौथा

प्रश्न 3. ताड़ी आंदोलन की शुरुआत किस राज्य से हुई थी?

a. आंध्र प्रदेश b. महाराष्ट्र

c. मध्य प्रदेश d. झारखंड

प्रश्न 4. सरदार सरोवर बांध किस नदी पर बनाया गया है?

a. नर्मदा b. दामोदर

c. गंगा d. यमुना

प्रश्न 5. सूचना के अधिकार अधिनियम कब लागू हुआ?

a. 2002 b. 2005

c. 2010 d. 2012

## लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6. दलित पैंथर्स आंदोलन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

प्रश्न 7. चिपको आंदोलन से आप क्या समझते हैं।

प्रश्न 8. सूचना के अधिकार आंदोलन के मुख्य पहलुओं पर प्रकाश डालिए।

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 9. भारतीय किसान यूनियन पर संक्षिप्त में वर्णन करें।

प्रश्न 10. नर्मदा बचाओ आंदोलन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालें।

© JCERT not to be republished